extract concessions from us. Sir, you must be remembering, the United States of America made a big propaganda in their country that the garments we exported to the United States of America were highly inflammable. Such tricks are resorted to by some of these countries to put India in a tight corner.

I also request the Government to gear up our quality control mechanism to go into this question and to see that these food products are processed and handled in a hygienic condition. I request the Government to take into consideration the magnitude of this question and to discuss this issue with the Europen Economic Community to safeguard our national interests and also to protect lakhs and lakhs of fishermen and workers engaged in this industry.

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे (गुजरात): महोदय, पिल्लै जी ने जो कहा है, मैं उससे एसोसिएट कर रहा हूं क्योंकि यह हजारों फिशरमेन के परिवारों का सवाल है। परदेशी लोगों की यह चाल हो रही है कि इंडिया से यह एक्सपोर्ट न हो। बहुत लंबे समय से लाखों फिशरमेन, जो यहां भी डीप फिशिंग चल रही थी, उनकी मांग कर रहे थे कि बंद होनी चाहिए। यह बाहर के देशों की एक बनाई हुई चाल है, जिस पर हमारी सरकार जरूर सोचे और गरीब फिशरमेन लोगों के लिए कुछ न कुछ रास्ता निकाले। धन्यवाद।

SHRI J. CHITHARANJAN (Kerala): Sir, I would like to associate myself with Shri Ramachandran Pillai in calling the attention of the Government to the serious situation that has arisen due to the decision of the countries belonging to the European Econmic Community banning the import of fish products from India.

Sir, if this decision is implemented, it will create a very serious situation in India. We have a very long seashore. About 80 lakh fishermen and their families are there. We are exporting about Rs.3000 crores worth of fish products. The European countries are the main consumers. As such, if this decision is implemented, the fishing industry and the fish-processing industry will be in doldrums. The life of the lakhs and lakhs of fishermen and the other people who are associated with this process will be in great difficulty. And it will affect the economic situation of various States also, including Kerala, Andhra Pradesh and other States.

Therefore, I request the Government of India to take serious measures to see that the export to these countries could be renewed. Of course, the Government of India will have to take one or two other measures also regarding the quality of the products. The hygienic conditions in which they are processed will also have to be attended to. All the necessary steps will have to be taken. With these words, I conclude.

RE. CRITICISM OF SAINTS BY UNION MINISTER OF WELFARE AT A PUBLIC FUNCTION IN CHANDIGARH

श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेल (गुजरात): थैंक यू सर। सर, हमारे मंत्री जी सदन के बाहर कैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, वह मैं आपके माध्यम से सदन के सामने रखना चाहती हूं। आज सुबह मैं एक अखबार पढ़ रही थी। अखबार था — "पंजाब केसरी", जिसका पन्ना नंबर—7 पर मेरी नजर गई। हैडिंग लाइन बनी थी — "साधु तो ड्रामेबाज हैं, उन्हें रगड़े लगाए जाने चाहिएं — रामूवालिया जी"। फिर मैंने पूरा अखबार पढ़ा। उन्होंने चंडीगढ़ में प्रवचन दिया है। इसमें लास्ट पैराग्राफ से मैं उल्लेख करना चाहती हूं। उन्होंने आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर साधुओं के बारे में प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों व धारावाहिकों की आलोचना करते हुए कहा "कि यह साधु तो ड्रामेबाज हैं, उनको रगड़े लगाए जाने चाहिए। अगर मैं संबंधित मंत्रालय का इंचार्ज होता तो आकाशवाणी और दूरदर्शन पर इन ड्रामेबाज साधुओं के कार्यक्रम व धारावाहिक बंद करवा देता" उन्होंने कहा "कि मैं तर्कशीलों का समर्थक हूं।"

सर, हमारे मंत्री जी ने ऐसे जो शब्द कहे हैं, इन पर मैं अपनी आपत्ति दर्ज कराना चाहती हूं। इन मंत्री जी ने समाज का और हमारे साधु-संतों का अपमान किया है।

हमारे जो समाज के लोग हैं, जो ऐसे धारावाहिक देखते हैं और कथाओं में जाते हैं, कथा सुनते हैं, उन सबका इन्होंने अपमान किया है। सर, दूरदर्शन द्वारा जो धारावाहिक दिखाए जाते हैं, मैं हर रोज सुबह वह देखती हूं, सुनती हूं। वह धारावाहिक किनके हैं? गुजरात के हमारे विद्वान और चिंतक आसाराम बापू की धारावाहिक चलती है और हमारे जो गुजरात में छोटे मोरारी बापू हैं, रमेश भाई ओझा के नाम से पहचानते हैं, उनकी धारावाहिक चलती है। इसमें बुरा क्या है? साधु और संत लोग जो कथाएं करते हैं, इन कथाओं को सुनने के लिए लोग जाते हैं तो उनको मानसिक रूप से शांति मिलती है। हमारी जो संस्कृति है, उस संस्कृति की परम्परा को साधु-संत आगे बढ़ा रहे हैं। ऐसे साधुओं के लिए आप इस तरह से अपमानजनक शब्द बोलें तो वह मुझे ठीक नहीं लगता है। मैं यह भी कहना चाहती हूं कि एक ओर तो हम साधु-संतों के लिए ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं और दूसरी तरफ पेपर में हम पढ़ते हैं और कई लोगों में जब बात-चीत होती है तब भी हम सुनते हैं कि जब भी किसी राजनीतिक नेता पर आपत्ति आती है तो वह तुरंत साधु-संतों के पास आश्रम में पहुंच जाते हैं और पैर में पड़ जाते हैं और डोरे-धागे करवाते हैं और यज्ञ भी कराते हैं। इन्हीं साधु-संतों के बारे में ऐसे अपमानजनक शब्द हम सदन के बाहर बोलते जा रहे हैं।

दूसरा, मैं यह भी पूछना चाहती हूं, जो उन्होंने कहा है कि यदि मैं संबंधित मंत्रालय का इंचार्ज होता तो यह सब बंद करवा देता, तो क्या वह नीति-विषयक निर्णय जो आप मंत्रिमंडल में लेते हैं, तो क्या उसमें सब मंत्रियों की राय नहीं होती है? क्या हरेक मंत्री अलग-अलग सरकार चला रहा है? क्या आपका मंत्रि-मंडल में कोई तालमेल नहीं है? क्या अलग-अलग मंत्री अलग-अलग सरकार चला रहे हैं? मैं यह भी कहना चाहती हूं कि सूचना और प्रसारण मंत्री जी का भी आपने अपमान किया है क्योंकि हमारे संबंधित मंत्री जी अच्छी तरह से अपना मंत्रालय चला रहे हैं।

इसी तरह से हाउस में कोई मंत्री या मैम्बर आफ पार्लियामेंट कोई आपत्तिजनक शब्द बोलते हैं तो सब उनसे माफी मंगवाते हैं, रिकार्ड में से उनके शब्द निकाल दिए जाते हैं, लेकिन जब सदन के बाहर ऐसे आपत्तिजनक शब्द बोले जाते हैं तो हम सबको इस पर सोचना चाहिए कि ऐसे शब्द बोले जाने चाहिए या नहीं बोले जाने चाहिए।

मैं सदन के माध्यम से मांग करती हूं कि माननीय मंत्री जी ने साधु-संतों के बारे में जो सदन के बाहर शब्द कहे हैं, वे चंडीगढ़ में अम्बेडकर भवन के उद्घाटन के समारोह में गए थे, उसी समय उन्होंने वह वक्तव्य दिया, वह पूरा पंजाब केसरी में छपा है, तो जो शब्द उन्होंने बोले हैं, उनके लिए वे साधु-संतों से माफी मांगें और ऐसे शब्द भविष्य में दोबारा नहीं बोले जाने चाहिए और जो धारावाहिक चल रहे हैं, वह चलते रहने चाहिए क्योंकि वे हमारी परम्पराओं को और संस्कृति को दर्शाते हैं और कथाएं सुनकर कई लोगों का जीवन भी बदल जाता है।

श्री विष्णु कान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं इसका समर्थन करता हूं। मैं कहना चाहता हूं **..(व्यवधान)..**

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे (गुजरात): महोदय, **..(व्यवधान)..** महोदय, **..(व्यवधान)..**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): Mr. Minister, do you want give any personal explanation?

THE MINISTER OF WELFARE (SHRI BALWANT SINGH RAMOOWALIA): Yes, Sir.

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे: महोदय, मैं भी इसका समर्थन करता हूं। **..(व्यवधान)..**

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: मैं यह कहना चाहता हूं कि यह जो साधु-संत हैं **..(व्यवधान)..**

श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेल: मुझे आपत्ति है आपके शब्दों पर। **..(व्यवधान)..**

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: बड़े महापुरुष हैं, इनके लिए ऐसे शब्द नहीं बोले जाने चाहिए। **..(व्यवधान)..**

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे: बड़े सत्पुरुष हैं जो कथाएं करते हैं, उनके लिए ऐसे शब्दों का बोलना मैं समझता हूं कि **..(व्यवधान)..**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): The hon. Minister wants to say something. *(Interruptions)* He has a right to give his personal explanation. Let him finish. *(Interruptions)* You can raise your point

after him. *(Interruptions)* Daveji, please sit down. I will permit you. *(Interruptions)*... Please sit down. *(Interruptions)*... The hon. Minister has a right to give personal explanation. *(Interruptions)*

श्री बलवंत सिंह रामूवालिया: वाईस चेयरमैन साहब, शायद बहनजी जानती नहीं कि मैं किस विचार का व्यक्ति हूं। एक पेपर के 2 शब्द पर आप इतने आपे से बाहर हो गए। आपको पता नहीं है कि मैं क्या कह रहा था। मैं जो कह रहा था ...**(व्यवधान)** मैंने तो जिंदगी में कभी किसी कुत्ते को गाली नहीं दी। मैं तो एक उसूलों का आदमी हूं। इन साधु-संतों से देश की रक्षा कराते-कराते मेरे 7 रिश्तेदार कत्ल हुए हैं। आप किसकी बात कर रहे हो? आपने रामूवालिया के दुःखी ज़ख्मों को छेड़ दिया ...**(व्यवधान)** अरे, सुन तो लीजिए, सुन तो लीजिए कि मैं क्या कह रहा था। मैं यह कह रहा था कि डा० अम्बेडकर एक साधू थे। वह भी एक साधू थे। उस साधू ने तपस्या की दलितों के लिए, संघर्ष किया दलितों के लिए। मैंने पंजाब के एक शेर का प्रयोग किया था। आप सुन लीजिए। मैंने कहा कि — "कुछ साधू ऐसे भी हैं जो डेरों में बैठकर, मंदिरों-गुरुद्वारों में बैठकर इंसानों के कत्ल करने का हुक्म देते थे"। आपको पता नहीं है कि मैंने क्या कहा। मैंने पंजाबी में कहा कि — "साड्डा नी संबंध ..."। गुरुद्वारों में बैठकर, मंदिरों में बैठकर गड्डी चढ़ा दो, रगड़ा दे दो, कत्ल कर दो, इतने-इतने आदमी उड़ा दो, मैं उसका जिक्र कर रहा था। मैंने कहा कि "मेरा नी संबंध उन डेरयां दे नाल, साधू जित्थे मिल गए लुटेरयां दे नाल"। यह कह रहा था मैं। आपने तो मेरी पेशी डाल दी ...**(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): Mr. Minister, you please address the Chair. *(Interruptions)*...

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: अखबार में जो छपा है, उसका खंडन करना चाहिए ...**(व्यवधान)**

श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेल: पूरा भाषण आपका हमने सुना है और हमारे कार्यकर्ताओं ने भी सुना है...**(व्यवधान)**

श्री बलवंत सिंह रामूवालिया: मैं आपका साथी हूं, मेरे ऊपर भरोसा नहीं? मैं आपका भाई सदस्य हूं। सुन लीजिए, फिर मैंने यह कहा कि अनुसूचित जनजाति के लोग गरीब हैं, पढ़ नहीं सके, उनके पास आर्थिक ताकत नहीं है इसलिए सुपरस्टीशन वाले उनको ज्यादा ऐक्सप्लॉयेट करने में सफल हो जाते हैं। फिर मैंने यह कहा कि सच्चे संत और सच्चे साधू भी हैं, आप भेस की बात न करें, आप उनकी आईडियोलॉजी की बात करें मैंने कहा कि— "ऐसे साधू भी मैंने देखे जिनका भेस साधू का था मगर उनको कार्य चोरों के थे, डाकुओं के थे और कातिलों के थे।"

अगर किसी पुलिसमैन के सामने से रैड-लाईट पर कोई मोटरसाईकिल निकल जाए तो 200 रुपए चालान हो जाता है। मैंने कहा कि यहां ऐसे भी साधू थे, धर्म को यह गलती नहीं करनी चाहिए जिन्होंने 200 आदमी कत्ल किए, उनको सरोपे दिए गए। मैं तो यह कह रहा था। कहां मैंने रगड़ा लगाया? बहनजी, आप मेरी इतनी बड़ी बात को, 2 लफ्जों में मेरी आईडियोलॉजी को कत्ल करना चाहती हैं? प्लीज सुनिए, मैं इस पर डटा हूं। मैंने जाकर प्रांतों में, अमरीका में ये बातें कही हैं और सारी जिन्दगी कहूंगा चाहे मेरा गला कट जाए। मैंने देखा है कि साधू-संतों के भेस में जिन्होंने कत्ल किए, उनको सरोपे मिले हैं, जिन्होंने 200 आदमी कत्ल किए हैं उनको सरोपे मिले हैं, how can I remain idle?

फिर मैंने कहा कि दूरदर्शन पर कुछ ऐसे सीन आते हैं जो सुपरस्टीशन को बढ़ाते हैं। हमारी नयी जनरेशन उन दृश्यों को देखकर किताब पढ़ने, मेहनत करने और अपनी मेहनत के बलबूते पर आगे बढ़ने के बजाय सुपरस्टीशंस पर निर्भर होती जा रही है। मैंने यह कहा था। मैंने यह कहा। मैं आज भी यह कहता हूं कि मैं सुपरस्टीशियन के प्रोपेगेंडा के खिलाफ हूं और रहूंगा। किन्तु मैं गुरु ग्रंथ साहिब के, श्रीमद् भगवत् गीता, कुरान शरीफ के बारे में कह रहा था कि कुरान शरीफ, श्रीमद् भगवत् गीता, गुरु ग्रंथ साहिब की पूजा करो, इनसे सीधा संबंध जोड़ो, बिचौलिये अच्छे नहीं होते। बिचौलिए साधु संत चोर भी हो सकते हैं, संत भी हो सकते हैं—मैंने यह कहा है। मेरा स्पष्टीकरण, जो मैंने अंबेडकर फाउंडेशन में कहा, मैं उस पर स्टिक करता हूं। मैं अपने देश, अपने पवित्र गुरु ग्रंथ साहिब, पवित्र गीता, पवित्र कुरान शरीफ, हिन्दू-सिख यूनिटी, भारत की एकता और अखंडता के पक्ष में हूं और सुपरस्टिशियन के खिलाफ हूं। मैंने तर्कशीलों की मदद की है, आगे भी करूंगा। मैं चाहता हूं कि हमारी आने वाली जैनरेशन तंत्र, मंत्र, जादू टोना, ताबीज आदि से निकले, इनके मैं खिलाफ हूं। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): Now the matter is closed. The hon. Minister has given his explanation. He has denied it. The matter is closed.

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: माननीय मंत्री जी, मेरा निवेदन यह है कि जो कुछ आपने कहा है, उसका आप खंडन करें। पंजाब केसरी में यह छपा है कि ...(व्यवधान)... आप मुझे बोलने दीजिए।

श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेल: आप सुन तो लीजिए। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): He has said that....*(Interruptions)*... The Minister has clarified it. The matter is closed. Prof. Ram Kapse. ...*(Interruptions)*...

श्री बलवंत सिंह रामूवालिया: मैं उसका खंडन नहीं करूंगा। मैंने पंजाब केसरी पढ़ी नहीं है। ...(व्यवधान)...

श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेल: पंजाब केसरी में जो छपा है, उसका आप खंडन करिए। ...(व्यवधान)...

श्री गोविन्द राम मिरी (मध्य प्रदेश): आप खंडन करिए। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN. F. FERNANDES): The matter is closed. Prof. Ram Kapse, please begin.

श्री बलवंत सिंह रामूवालिया: मैं खंडन नहीं करूंगा। ...(व्यवधान)...

श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेल: आप खंडन नहीं करेंगे तो ऐसा लगेगा कि वह सही है। ...(व्यवधान)...

श्री सुशील कुमार संभाजीराव शिन्दे (महाराष्ट्र): उन्होंने स्पष्टीकरण तो बहुत अच्छा दे दिया है। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): The hon. Minister has denied it. He has given a lengthy explanation. The matter is closed.

श्री बलवंत सिंह रामूवालिया: मैंने डिनाई नहीं किया। जो पेपर छपा है, वह मैंने नहीं पढ़ा है। जो कुछ मैंने कहा है, वह मैंने बता दिया है। मेरे मुंह में डिनाई डालिए।

श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेल: पहले पैराग्राफ में पढ़िए। आप ही कुछ बोले हैं। ...(व्यवधान)...

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे: पेपर को जरा आप देख लीजिए, फिर उसका खंडन करिए। ...(व्यवधान)...

श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेल: ...(व्यवधान)...उन्होंने कुछ कहा है। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): I cannot direct the Minister either to deny or to own the statement. *(Interruptions)*. Please listen to me. Hon. Member, please listen to me. ...*(Interruptions)*... I am on my legs.

श्री शिव चरण सिंह (राजस्थान): धारावाहिक के बारे में बोले हैं। ...(व्यवधान)...

श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेल: आप धारावाहिक के बारे में भी बोले हैं। आप लास्ट पैराग्राफ पढ़िए। दूसरे पैराग्राफ में भी आपने आपत्तिजनक बातें बोली हैं, इसमें ऐसा लगता है। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): The hon. Minister has made a personal explanation. I cannot give him any direction. If you are not satisfied, you can approach the Chair for further discussion. *(Interruptions)*. Now the matter is closed.

श्री बलवंत सिंह रामूवालिया: सर, मैं मुरारी बाबू जी और बापू आसाराम जी के प्रति पूरी श्रद्धा रखता हूं। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): Now the matter is closed. Prof Ram Kapse.

RE. NEED TO ISSUE CLEAR-CUT ORDERS RELAXING FLAG RULES ON 14TH AUGUST, 1997 TO CELEBRATE GOLDEN JUBILEE OF INDEPENDENCE

PROF. RAM KAPSE (Maharashtra): Mr. Vice-Chairman, Sir, I do not know whether the Government exists or not.